16. कर्नाटक का युद्ध

भारत में व्यापारिक प्रभुत्तव के संबंध में अंग्रेजी और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध लड़े गये उन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है इन युद्धों की पृष्ठभूमि में कुछ अन्य कारण थे। जैसे- समुद्र के स्वामित्व पर एकाधिकार की चेष्टा, व्यापारिक एकाधिक पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न एवं राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के प्रयास शामिल थे। पूर्वी समुद्र तट को कोरोमण्डल कहा गया। इसके पीछे की भूमि को कर्नाटक प्रदेशक नाम से जाना जाता है जिसकी राजधानी अकार्ट थी। कर्नाटक प्रदेश के चार प्रमुख प्रदेशों में मद्रास, पांडुचेरी, वेलोर एवं त्रिचनापल्ली थे। वस्तुत: कर्नाटक, हैदराबाद निजाम, निजामुलमुल्क आसफजाह के अधीन एवं प्रांत था।

कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-1748):

प्रथम कर्नाटक युद्ध के मुख्य कारण बाहरी राजनीतिक गतिविधियों से अनुप्रेरित थे। वस्तुत: 1740 ई. फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के बीच आस्ट्रियाई उत्तराधिकारी युद्ध लड़ा गया अत: भारत में भी फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश कंपनियाँ लड़ पड़ी। पांडुचेरी फ्रांसीसी गर्वनर डूप्ले (1740-54) ने युद्ध को टालने की नाकाम कोशिश की तथा म्रदास के ब्रिटिश गर्वनर मोर्स से बातचीत करके युद्ध को टालने का प्रयास किया लेकिन ब्रिटिश गर्वनर बार्नेट ने कुछ फ्रांसीसी युद्ध पोतो पर कब्जा कर लिया अब डूप्ले ने मॉरीसस के गर्वनर लॉबूर्दने को बुलाया और उसकी सहायता से संपूर्ण दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया तथा मद्रास की भी घेराबन्दी कर ली अत: मद्रास के गर्वनर मोर्स एवं किरानी रार्बट क्टाइव का आत्मसमर्पण।

चूंकि यह लड़ाई कर्नाटक नबाव अनुबरूद्धीन के प्रभाव क्षेत्र में हो रही थी। अत: अनुवरूद्धीन ने डूप्ले को युद्ध बन्द करने तथा मद्रास की घेराबन्दी को हटाने को कहा लेकिन डूप्ले नही माना क्योंकि उसे भारतीय नबाबों की नौ सेना की कमजोरी ज्ञात थी अब अनुवरूद्धीन ने क्रुध होकर महमूद खान के नेतृत्व में 10 हजार सैनिकों का दल सेना डूप्ले के खिलाफ भेजा। जिसे फ्रांसीसी कैप्टन ने मात्र 930 सैनिकों की मदद से परास्त कर दिया।

उधर मॉरीसस गर्वनर लॉबूर्दने ने डूप्ले की अनिच्छा के बावजूद मद्रास के ब्रिटिश गर्वनर मोर्स से एक अच्छी रकम लेकर मद्रास अंग्रेजों को वापस कर दिया और स्वयं मॉरीसस लौट गया।

लेकिन लॉबूर्दने के वापस जाते ही डूप्ले ने मद्रास पर पुन: कब्जा कर लिया। फ्रांसीसियों से मिली अंग्रेजों की पराजय का बदला लेने के लिए इंग्लैण्ड से एक जहाजी बेड़ा वोस्कावेन के नेतृत्व में भेजा जिसमे भारत पहुँचकर फ्रांसीसी वस्ती पाँडुचेरी को घेरने की कोशिश की लेकिन डूप्ले के भाग्य ने साथ और एक भयंकर तूफान की वजह से वोस्कावेन का समुद्री वेड़ा अस्थव्यस्थ हो गया और पाण्डिचेरी का पतन नहीं हो सका।

अगले क्रम में 1748 में यूरोप में "एक्स-ला-ए शापेल" की संधि से फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के बीच युद्ध समाप्त हो गया तो भारत में फ्रांसीसी और अंग्रेजों के बीच युद्ध की समाप्ती हो गयी संधि के शर्त अनुसार मद्रास पुन: अंग्रेजों को मिल गया तथा फ्रांसीसियों को अमेरिका में लुइसवर्ग प्रान्त मिला इस प्रकार संघर्ष का प्रथम दौर समाप्त हुआ।

कर्नाटक के प्रथम युद्ध के परिणाम के संदर्भ में भारत में किसी भी पक्ष को क्षेत्र संबंधी कोई लाभ नहीं हुआ। भारत में फ्रांसीसी शक्ति की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। तथा युद्धों व सामुद्रिक शक्ति की निर्णायक भूमिका स्पष्ट हुई। तथा भारतीय थल सेना की कमजोरी भी उजागर हो गयी। स्पष्ट संकेत मिला कि एक प्रशिक्षित एवंम अनुशासित सेना एक अप्रशिक्षित बहुत बड़ी सेना को आसानी से पराजित कर सकती है।

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1748-1754):

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध, कर्नाटक एवं हैदराबाद की उत्तराधि कार समस्या से अनुप्रेरित था। हैदराबाद के स्वंतत्र राज्य की स्थापना 1724 निजामुलमुल्क आसफजाह (चिनकिलिचखां) ने की थी।

- अवध राज्य की स्वतंत्रता का संस्थापक 1722 में सआदत खाँ वुर्हानुलमुल्क था।
- बंगाल राज्य की स्वतंत्रता का संस्थापक (1717-27) मुर्शीद कुली खाँ।
- मई 1748 में चिनकिलच खाँ की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र नासिर जंग हुआ जिसे अंग्रेजों का समर्थन प्राप्त था। परन्तु मुगल बादशाह ने चिनकिलच खाँ के नाती मुजफ्फरजंग को दक्षिण भारत का सूबेदार नियुक्त कर दिया अत: नासिर जंग एवं मुजफ्फर जंग की बीच उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। डूप्ले ने मुजफ्फर जंग को सर्मथन दिया और 1750 में एक युद्ध में डूप्ले ने अंग्रेजों को पराजित करके नासिर जंग को हैदराबाद निजाम घोषित कर दिया। मुजफ्फर जंग ने खुश होकर जफर जंग बहादुर की उपाधि 20 लाख रूपये उसे नगद दिये साथ ही साथ उसने डूप्ले को कृष्णा नदी

के दक्षिण के समस्त प्रदेशों का गर्वनर भी नियुक्त कर दिया। मुजफ्फर जंग के यहाँ जर्नल बुसी के नेतृत्व में एक फ्रांसीसी सेना रख दी इस प्रकार डूप्ले ने उस सहायक संधि की उस नीति का सूत्रपाद किया जिसका उपभोग ब्रिटिश गर्वनर वेलजिही ने ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूती प्राप्त की।

- अगले क्रम में कर्नाटक की उत्तराधिकार समस्या ने भी फ्रांसीसियों एवं अंग्रेजों को लड़ने के लिए मजबूर किया वस्तुत: कर्नाटक के नेतृत्व दोस्त अली की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अनुवरूद्धीन एवं दामाद चंदा साहिब के बीच उत्तराधिकार युद्ध छिड़ा। अगस्त 1749 में अम्बूर की लड़ाई में डूप्ले ने अनवरूद्धीन को मारकर चंदा साहिब को कर्नाटक का नबाब घोषित कर दिया। लेकिन अनुवरूद्धीन का बेटा मौहम्मद अली वच निकला और उसने भागकर त्रिचनापल्ली की शरण ली। इधर फ्रांसीसी कमान्डर लां ने बड़ी मजबूती से घेरा रखा था। इसी मद्रास में कर्लक के रूप में मौजूद रार्वट क्लाइव ने सुझाव दिया कि यदि एक ब्रिटिश आर्मी कर्नाटक की राजधानी अर्काट में चंदा साहिब को घेर ले तो निश्चित ही त्रिचलनापल्ली से कुछ सेना अर्काट जरूर जायेगी और क्लाइव का अनुमान पूरी तरह सही निकला। क्लाइव ने मात्र 510 सैनिक की मदद से अर्काट जीत लिया। चंदा साहिब ने आत्मसमर्पण कर दिया। और इधर 1752 में त्रिचलनापल्ली में फ्रांसीसियों की शक्ति बँट जाने के कारण फ्रांसीसी कमाण्डर लाँ को भी ब्रिटिश सेना के समक्ष आत्म समर्पण करना पड़ा। और 1753 के अन्त तक फ्रांसीसी निर्णायक रूप से पराजित हो गये। युद्ध में हुई आर्थिक क्षति एवं फ्रांसीसियों की हार के लिए डूप्ले को दोषी मानते हुए फ्रांसीसी अधिकारियों ने उसे वापस फ्रांस बुला लिया। 1754 में डूप्लें की जगह भारत में नया फ्रांसीसी गर्वनर गोदेहो भारत आया उसने अंग्रेजों से अंग्रेजी शर्तों पर संधि कर ली। तथा मौहम्मद अली कर्नाटक का नबाब स्वीकार कर लिया गया। इस अपमान पूर्ण संधि के लिए डूप्ले ने लिखा। उसने देश के विनाश एवं जाति के अपमान पर हस्ताक्षर कर दिये।

कर्नाटक तृतीय युद्ध (1756-63):

तीसरा कर्नाटक युद्ध भी वाहय कारणों से अनुप्रेरित था वस्तुत: यूरोप में इंग्लैण्ड एवं फ्रांस के बीच सप्तवर्ष युद्ध की शुरूआत में भारत में तमाम अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को अनुप्रेरित किया और ब्रिटिश रार्वट क्लाइव एवं वाटसन ने फ्रांसीसी कोठी चन्द्रनगर पर मार्च 1757 में कब्जा कर लिया।

- फ्रांसीसियों के संदर्भ में भारत में अप्रैल 1757 में काउट द लाली को फ्रांसीसी गर्वनर बनाकर भारत भेजा गया वस्तुत: यही से आंग्ल फ्रांसीसी संषर्घ की शुरूआत हुई। लाली ने अंग्रेजी वस्ती फोर्ट सेंट डेविड को जीत लिया और मद्रास को मजबूती से घेर लिया परन्तु सितम्बर 1759 में ब्रिटिश नौ सेनापति पोकाँक (ब्रिटिश नौ सेनापति वाटसन की मृत्यु के बाद इस पद पोकाँक की नियुक्ति हुई।) ने लाली को असफल कर दिया। अब लाली ने अपनी मदद के लिए हैदराबाद से जनरल बूसी को एवं उसकी सेना को बुला लिया। जिससे हैदराबाद के फ्रांसीसियों की पकड़ कमजोर हो गयी अन्त: 22 जनवरी 1760 को वाड़िवाश के युद्ध में अंग्रेजी सेनापति आयरकूट ने फ्रासीसियों को अंतिम रूप से पराजित किया । बुसी कैद कर लिया तथा लाली ने आत्मसमर्पण कर दिया। अन्तत: 1761 तक क्रमश: पाण्डिचेरी, माही एवं जिन्जी पर भी कब्जा हो गया। 1763 में यूरोप में पेरिस की संधि से सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हो गया अत: भारत में भी ब्रिटिश एवं फ्रांसीसियों के बीच संधि हो गयी यद्यपि इस संधि से पाण्डिचेरी फ्रांसीसियों को वापस मिल गया। लेकिन अब वह इसकी घेराबन्दी नहीं कर सकते थे। इस प्रकार भारत में फ्रांसीसियों की स्थित अब केवल व्यापारियों की तरह रह गयी और भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य का सपना अधूरा रह गया। यद्यपि 1954 तक पाण्डिचेरी में मौजूद रहे।